



LUCKNOW, Friday,
11 June 2021

LUCKNOW EDITION

Lucknow/Sitapur Distt.- ₹2.50/-
Other Distt.- ₹3/-
Pages 10

दैनिक जागरण



Only at
₹2.50
daily

www.inextlive.com

Published from LUCKNOW • Agra • Bareilly • Dehradun • Gorakhpur • Jamshedpur • Kanpur • Meerut • Patna • Prayagraj • Ranchi • Varanasi

नेक्स्ट लेवल पर पहुंची आर्म्स रेस } 10

inext

क्या पर्दे पर द्रौपदी के रोल में नजर आएगी रिया चक्रवर्ती? } 8

Trending Hashtags
#YogiAdityanath
#HealthSecretary

Max: 27.4°C
Min: 27.0°C

कोरोना हेल्पलाइन नंबर (लखनऊ): 0522-4523000

SHARE

परमाणु बिजली के साथ एन्वॉयरमेंट में होगा सुधार



अमृतेश श्रीवास्तव

(Writer is
Associated with
NPCIL department
of Atomic Energy)

आत्मनिर्भरता के सोपान पर स्वर्णिम कदम रखते हुए कुछ समय पहले, देश एक ऐसे ऐतिहासिक और अविस्मरणीय पल का गवाह बना, जिसने सभी देशवासियों के चेहरों पर खुशी की चमक बिखेरते हुए उनके सिर को गर्व से ऊंचा कर दिया. देखा जाए तो यह एक ऐसा मौका था, जो भारत को पूरी तरह से आत्मनिर्भर तरीके से परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छूने और सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुंचाने की दिशा में अहम भूमिका निभाने जा रहा था. इस सुनहरे पल को साकार करने के लिए देश के परमाणु वैज्ञानिकों और अभियंताओं की टीम ने अपनी अनवरत मेहनत और कार्यकुशलता का जिस तरीके से परिचय दिया, वह निसंदेह काबिल-ए-तारीफ था. यह वह अवसर था जब गुजरात राज्य में स्थित काकरापार परमाणु विद्युत परियोजना (केएपीपी) की सबसे अधिक क्षमता वाली 700 मेगावाट की प्रेशराइज्ड हैवी वाटर रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर प्रौद्योगिकी पर आधारित) की पहली स्वदेशी इकाई, केएपीपी-3 को देश के पश्चिमी गिड से जोड़ा गया. इसकी डिजाइनिंग और स्ट्रक्चरिंग, न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड द्वारा किया गया है, जो परमाणु ऊर्जा विभाग के तत्वावधान में कार्यरत है. पिछले साल 22 जुलाई, 2020 को इस इकाई ने पहली बार क्रिटीकैलिटी हासिल की थी, जिसका तात्पर्य नियंत्रित तरीके से न्यूक्लियर फिशन की प्रक्रिया का प्रारंभ होना है. पश्चिमी गिड से जोड़े जाने

के बाद, एटॉमिक एनर्जी रेग्युलेटरी बोर्ड (ईआरबी) से चरणबद्ध अनुमतियां प्राप्त होने पर इसकी विद्युत उत्पादन क्षमता को क्रमिक रीति से 700 मेगावाट तक बढ़ाया जाएगा. इस इकाई से बनने वाली बिजली से हजारों घरों व अनेक विशाल व छोटे उद्योगों को आने वाले कई सालों तक बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जा सकेगी. यह रिएक्टर, संपूर्ण रूप से स्वदेशी प्रौद्योगिकी पर आधारित 'पीएचडब्ल्यूआर' श्रेणी का देश का पहला ऐसा न्यूक्लियर विद्युत रिएक्टर है, जो सबसे अधिक संस्थापित क्षमता वाला (700 मेगावाट विद्युत) रिएक्टर है. इससे पहले भारत में सबसे अधिक क्षमता वाले स्वदेशी रिएक्टर, 540 मेगावाट विद्युत क्षमता वाले पी एच डब्ल्यू आर रिएक्टर थे, जिनकी दो इकाइयां, महाराष्ट्र के तारापुर में स्थित हैं. इस इकाई के शुरुआत होने के साथ ही अब भारत में प्रचालनरत परमाणु विद्युत संयंत्रों की संख्या 22 से बढ़कर 23 हो गई है और इस इकाई के पूर्ण क्षमता पर प्रचालन प्रारंभ करने के बाद देश की कुल संस्थापित न्यूक्लियर विद्युत क्षमता 6780 मेगावाट से बढ़कर 7480 मेगावाट हो जाएगी. साथ ही, देश में कुल 6000 मेगावाट विद्युत क्षमता के 8 न्यूक्लियर विद्युत रिएक्टर निर्माणाधीन भी हैं. जहां एक ओर कोविड-19 के रूप में विश्वव्यापी चुनौतियां थीं, वहीं दूसरी तरफ, राज्य एवं केंद्र सरकार के बीच पारस्परिक समन्वयन बनाए रखकर तमाम प्रोटोकॉलस और दिशा-निर्देशों

का पालन करते हुए एवं एटॉमिक एनर्जी रेग्युलेटरी बोर्ड (ईआरबी) की तमाम प्रक्रियाओं और परीक्षणों से गुजरते हुए इस परियोजना ने इतनी विषम परिस्थितियों के बावजूद पहले क्रिटीकैलिटी हासिल की और बाद में पश्चिमी गिड से जुड़कर देश को विद्युत की आपूर्ति सुनिश्चित करने की दिशा में निसंदेह एक ऐतिहासिक कदम आगे बढ़ाया है. कोविड-19 जैसे समय में भारत विश्व में चुनिंदा देशों में से एक बना, जिसने इस तरीके की एक बड़ी कामयाबी को हासिल किया और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अपना परचम लहराया. इस परियोजना की विशेषता यह है, कि हर 700 मेगावाट विद्युत क्षमता वाले यह दोनों रिएक्टरों पूर्ण रूप से भारतीय डिजाइन पर आधारित हैं. रिएक्टर में लगने वाले तमाम कल-पुर्जों और उपकरणों का निर्माण भी भारतीय कंपनियों द्वारा ही किया गया है, जो आत्मनिर्भर भारत और मेक-इन-इंडिया के स्वप्न को साकार करने की दिशा में एक सफल प्रयास है. निश्चित रूप से यह उपलब्धि प्रत्येक देशवासी के लिए गर्व का प्रतीक है. 700 मेगावाट क्षमता वाले इन रिएक्टरों की उत्कृष्ट डिजाइन, उच्च गुणवत्ता और विश्व के श्रेष्ठतम मानकों के अनुरूप, भारत में तैयार की गई है.

पूरी दुनिया में थर्मल पावर से बनी बिजली, ग्लोबल टेम्प्रेचर व एन्वॉयरमेंट के लिए एक चुनौती बनी हुई है, वहीं ग्लोबल एंड ग्रीन एनर्जी के रूप में गुजरात के काकरापार परमाणु विद्युत परियोजना की 700 मेगावाट वाली पहली स्वदेशी इकाई बगैर पॉल्यूशन बिजली उत्पादन का बेहतर ऑप्शन साबित होगी.

आज, जहां पूरी दुनिया में थर्मल पावर से बनी बिजली, ग्लोबल टेम्प्रेचर और वातावरण में उत्सर्जित होने वाली कई हानिकारक गैसों के कारण गहन चिंता का विषय बनी हुई है, वहीं दूसरी ओर स्वच्छ और हरित ऊर्जा के रूप में परमाणु ऊर्जा, एक बेहतर विकल्प साबित हो रही है जो बगैर किसी दूषण के विशाल मात्रा में 24 घंटे बिजली का उत्पादन करने में सक्षम है.

इस पृष्ठ पर अपनी राय हमें इस ईमेल पर भेजें
editor@inext.co.in

“ Nuclear power can continue to help us reduce our greenhouse gas emissions, but we must do everything we can to make it safer. ”
JOE SESTAK